रात्रिक्लास 28-3-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बेहद के बड़े2 बाप से बेहद का ऊंच दर्जा मिलता है। वह है स्वर्ग। स्वर्ग में भी फिर दर्जे हैं। आमदनी तो बड़ी अच्छी है। इतना बड़ा वर्सा किसको भी पता नहीं है मिलता है। फिर स्वर्ग में मालिक तो सभी कहेंगे ना। वहां ऐसा कुछ समझ आता नहीं है। कहना भी नहीं पड़ता है कि हम स्वर्ग के मालिक हैं। शायद वहां स्वर्ग का नाम भी न हो। नई दुनिया के मालिक हैं। एक ही धर्म है। वहां कोई नहीं याद भी नहीं दूसरे धर्म का पता ही नहीं रहता। उनको यह पता नहीं है कि दूसरा भी कोई धर्म था पास्ट में। आदि, मध्य अन्त, पास्ट, प्रेजेन्ट फ्युचर को तुम ही जानते हो। इस समय ही तुम यह सभी बातें समझते हो। सभी मौजूद हैं पास्ट का भी बाप समझा रहे हैं। इसको कहा जाता है आदि मध्य अन्त और डेक्युमेंटेशन को भी जान गये हो। यही तो जानना है। यह तो बच्चे सभी जानते हैं। सदैव खुशी नहीं रहती क्योंकि माया भूला देती है।

बाबा ने समझाया था मैगजीन जो निकली है। अखबारें पढ़ कर जो मनुष्य चलते हैं उनका फिर रेसपाण्ड भी करते हैं वह है अच्छी। सर्विस एबुल भी है। परन्तु जब वह अलग रईयत को बांटा जाये। जो अपने ही योग आदि को ऊंच समझते हैं उन्हों के पास जावे। हफ्ते में एक दो हजार जाये। भल फ्री भी जावे। तुम फ्री तो बहुतों को देते हो ना। नालेज सभी को देते ही कोई समझते हैं कोई नहीं समझते हैं। तो मैगजीन में कोई अच्छी2 बातें हैं। यह भी बाप समझते हैं और जिसने डाला वह समझ सकते हैं। और पढ़ने वाले इतना नहीं समझ सकते हैं। तो यह फ्री भी भेजा जाये। अच्छा समझ कर कोई समय शायद पूछे भी इनका दाम क्या है। यह है रूहानी नालेज। बोलो इनका पैसा नहीं लिया जाता। गाड-फादर पढ़ाते हैं। बच्चों से फी क्या लेंगे। गवर्मेन्ट का है तो लेना है। यह तो बाप का प्राईवेट है ना। चाहे लेवे या न लेवे। मैगजीन जो मंगाते हैं वह इतना समझते नहीं हैं जैसे बुधू लोग। बहुत महारथी तो पढ़ते ही नहीं हैं। बाबा सुना तो बहुत अच्छा लगा। उनको राय मिलनी चाहिए बहुतों को भेज देवे। फिर अखबार निकलेंगे तो उनको मदद भी देंगे। बाप चाहते हैं ऐसी2 मैगजीन जानी चाहिए। खास2 काम्पेलरीभेज देनी चाहिए। हजार भी खर्चा आये, फ्री भी भेज दी जाये तो कोई हर्ज नहीं। अच्छा बच्चों को रूहानीबाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानीबच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

रात्रिक्लास 29-3-68 ओमशान्ति

तुम हो दो बाप के सिकीलधे बच्चे। सो भी बड़े2 बाप के। एक निराकारी दूसरासाकारी। सिध होता है तुम नई सृष्टि के मालिक बनने वाले हो। यह भी नई कहेंगे। यह तो बहुत ऊंची है। संगम युग को भी ऊंच रखेंगे। इस पार लगने में बाकी थोड़ी देरी है। 5000 वर्ष पूरे हो गये हैं बाकी 8-9 वर्ष है। इस हालत में बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। जिस बात का कब बुधि में ख़याल भी नहीं था। बाप ने आकर तुम बच्चों को बधाईयां दी है। तुम्हारा राज्य नज़दीक है। बाप कहते हैं बच्चों तुम अभी अपना राज्य-भाग्य स्थापन कर रहे हो। 100% सर्वन भी है। सिर्फ बाकी बात है कौन सा पद प्राप्त होगा। नज़दीक चल कर देखेंगे क्या होगा। हीरे, जवाहर आदि के महल कैसे होंगे। क्या होगा। यह भी देखा है विमान भर कर कहां से सोना ले आवेंगे। मकान बनाने लिए जरूर कोई कारगोपलेन होगी जो भर कर ले आवेंगे। जिससे मकान बनावेंगे। तुम बच्चों को तो यही ख़यालात रहती होंगी। ऐसे नहीं समझना सागर से देवतायें थाली भरकर ले आवेंगे। वह तो अभी ज्ञान सागर से तुमको ज्ञान रत्न मिल रहे हैं। बाकी वह जवाहर तो खानियों से ले आवेंगे। कैसे होगा। बच्चे समझते हैं विजय तो होनी ही है। यह भी जो सर्विस एबुल बच्चे हैं उन्हों की ही ख़यालात में आवेगा। इनको तो रात-दिन ख़यालात होता है क्या होगा। खानियां कैसे भरपूर होंगी। सोने की खानियां तो यहां भी हैं। बहुत मुश्किल सोना निकालते हैं। हीरे निकलते हैं। बहुत मेहनत से खोद कर निकालते हैं। रफ निकलती है। ऐसे कब ख़यालात आगे नहीं आती थी। अभी तुम्हारी राजधानी स्थापन हो रही है। यह भी निश्चय है। पूछेंगे

क्या होता है, सोना हीरे कहां से लाते हैं। नोट आद को तो जरूरत ही नहीं। तुमऐसा इम्तहान पढ़ रहे हो जिसका ध्वजा नईदुनिया में मिलती है। यह ही कह सकते हो जैसे कल्प पहले बनाया था यहां आद वैसे ही बनावेंगे। यह चिन्तन सर्विस स्थूल बच्चों को ही चलती होगी। जो भी रिधी, सिधी वाले लोग हैं, जितना नज़दीक आते जावेंगे उन सभीकी रिधीयां सिधीया उड़ती जावेंगी। बाप आते हैं इन रिधीयों सिधीयों को खत्म करने। तुम बच्चे बलवान बनते जावेंगे। तो उन्हों की रिधी सिधी धक्ती रहेंगी। वह भी तो माया है। यह सभी रिधी-सिधी भक्ति मार्ग के हैं। तुम्हारा है योगबल। उनके आगे कुछ ठहर न सके। तुम्हारा बल बढ़ता जावेगा तो माया के बल खत्म होते जावेंगे। इस समय माया, रिधी, सिधी आद का अच्छा ही बल है। उनको ही रावण राज्य कहा जाता है। इस दुनिया में भल मनुष्यों के पास करोड़ों पदमों है। तुम बच्चे जानते हो बाकी कितना समय यह चलेंगे। यह खयालात होता है विलायत वालों का क्या होगा। सागर में डूब जावेंगा। जल जावेगा। तुम्हारे हाथ में तो कोई चीज़ नहीं आवेगी। तुम्हारे लिए स्वर्ग न्यु होगा। काम लाई हुई चीज़ छी2 चीज़ तुम्हारे लिए नहीं होगी। तुम नये बन जाते हो ना। पांच तत्व भी शुध हो जाते हैं। तो नई खानियों से नया सोना हीरे जवाहर आद निकलेंगे। कुछ परन्तु होगा जरूर। तो अन्दर में खुशी भी रहती है ऐसे ऐसे अपनी टाईम का सफलता होती रहेगी। यह खयालात उनके पास आते रहेंगे तो अच्छी सर्विस करते रहते होंगे। बाकी घर जाकर फिर आवेंगे पार्ट बजाने। यह आना-जाना तो होता ही रहता है। एक शरीर छोड़ कर जाना कोई बड़ा बात नहीं। सम्पूर्ण तो कोई बना नहीं है। सहन करना पड़ता है कुछ न कुछ।

अभी यह ज्ञान मिलता है आत्माओं को। संस्कार भी आत्मा ले जाती है। वह संस्कार वाली आत्मा बड़े घर में गई। समझ सकते हैं अच्छे घर में जाकर जन्म लिया होगा। आत्मा में ज्ञान होगा। परन्तु आरगन्स छोटा होने कारण बोल न सके। बड़े होंगे तो संस्कार इमर्ज होंगे। वह बच्चे भी सतोप्रधान सतोगुणी ही होंगे। सर्विस स्थूल बच्चे उंच पद पाने वाले हैं। उन्हों के जरूर ऐसे2 विचार चलते होंगे। समझ के नहीं चलेंगे। क्योंकि बुधि कहां कहां भटकती है। न आन्तरीक इतना खुशी में ही होंगे। खुशी में वह रहेंगे तो निश्चय बुधि और सर्विस करते रहेंगे। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सेन्टर्स भी सम्भाल रहे हैं। तो उन्हों को ऐसी2 खयालात आनी चाहिए। इनको भी आती है ना। तो बच्चों को भी खयाल आते होंगे। अमरपुरी के खयालात में रहते होंगे। वह इस दुनिया के खयालात में जास्ती न रहेंगे। यह अपनी अवस्था का अनुभव सुनाना चाहिए। बाबा अनुभव सुनाते हैं ना। ऐसे ऐसे विचार आते हैं। डाक्टर को खयालात रहेगा ना यह करेंगे यह करेंगे फिर यह आमदनी होगी। किनका अच्छी तरफ किनका छी छी तरफ बुधि योग जावेगा। तुम बच्चों को भविष्य नई दुनिया की ही खुशी है। यहां के मनुष्यों को बाहर की खुशी रहती है। तुम बच्चों को अलौकिक दिव्य खुशी। और कोई मनुष्य को यह खुशी नहीं होगी। और कोई तुम्हारे इस खुशी को नहीं जानते हैं। तुम ब्राह्मणों में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हो जानते हैं। अपनी नबज़ देखनी है किस प्रकार की खुशी है। वहां की खुशी है या यहां की खुशी है। मुझ खुसाफिरी कर रहे हो। कोई जल्दी कोई देरी से चलते हैं। तुमको अथाह खुशी रहनी चाहिए। स्कालरशिप लेने वाले को दिल भरी रहती है ना। बेहद के खुशी का नशा सिर्फ तुम ब्राह्मणों को ही है नम्बरवारपुरुषार्थ अनुसार। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को नमस्ते। नमस्ते।

रात्रिक्लास 30-3-68 ओमशान्ति

बनारस में सर्विस में मदद चाहिए। इस समय वहां की सर्विस बुधि को पाई हुई है। तो बाप कहते हैं जहां सर्विस देखो तो आजु, बाजु (आस-पास) वालों को सर्विस में मदद करनी चाहिए। वहां सर्विस अच्छी होती है। बाबा का सदैव खयाल रहता था। वहां से ही विद्वान आद पढ़ कर निकलते हैं। कलकत्ते वालों को भी लिखा है शान्ति-निकेतन बहुत अच्छा है। उस तरफ म्युज़ियम खुल जाये। तुम्हारा नाम अभी अच्छा होता

जाता है।

बाबा ने समझाया है हाल जो बनाते हैं शादियों के लिए उन्हा को भी समझाना है। बाबा के पास जरूर समाचार आ जावेगा। ऐसे2 समझाया। धर्मशाला भी शादियों के लिए बनाते हैं। लक्ष्मी-नारायण के चित्र बनाये हैं। विशाल बुधि जो होंगे वह बड़े साईज़ के चित्र पसन्द करेंगे। गवर्मेन्ट के कलेन्डरस भी बड़ी बनाती हैं। छोटे चित्रों के शौकिन जो हैं तो बाबा समझता है छोटी बुधि है। बड़े चित्र पर समझाना सहज होता है। प्रदर्शनी आद होते हैं तो छोटे चीज़ नहीं रखनी चाहिए। बड़े चित्र अच्छे हैं। जबकि छप कर तैयार हुई है तो उस पर ही सर्विस करनी चाहिए। यह चित्र बहुत अच्छे हैं। इन पर समझाया बहुत जाता है। बाबा समझते हैं छोटी बुधि है इसलिए बड़े चित्र पसन्द नहीं करते हैं। राजाओं पास, गवर्मेन्ट पास बड़े2 चित्र होते हैं। बाबा को तो 6×4 का साईज़ पसन्द आता है। बड़ा ही क्लियर है। छोटा घर भी भल हो तो भी मुख्य 6 चित्र 6×4 के लग सकते हैं। छोटे चित्र नहीं होनी चाहिए। यह तो 30×40 का छपाया है। तो कहां भी ले जा सकते हैं। बच्चे समझते हैं पत्थर बुधियों को समझाने में कितनी मेहनत लगती है। मेहनत करेंगे तब ही उच्च पद भी पावेंगे। कहते हैं शिव बाबा से सगाई करते हैं। यह पतियों का पति है। वास्तव में तो बापों का बाप टीचरों का टीचर गरुओं का गुरु है। पति अक्षर नहीं। पतियों का पति है। नहीं। बाप है ना। बापसे सगाई कैसे होगी। अक्षर बाबा कह देते हैं परन्तु समझाते हैं मैं बाप टीचर गुरु हूं। पति नहीं बन सकते। यह रांग है। अंगूठी पहनाई इसका मतलब यह नहीं सगाई है नहीं। यह है याद गार। शिव बाबा की याद रहेगी। शिव पति अक्षर कहना रांग है। यह यादगार है। ऐसे2 अक्षर नहीं कही जाती। बाप को पति नहीं कहा जाता। गाड फादर ही कहते हैं गाडहस वेन्ड नहीं कहेंगे। तो ऐसे2 अक्षर विचार कर बोलना चाहिए। कोई उल्टा अक्षर न निकले। भगवान क्या सिखलाते हैं। ऐसी2 बातों को थोड़ा क्लेक्ट करो। मुख्य है ही तीन। बाप टीचर गुरु वह है आत्माओं का बाप। यह भाईयों बहिनों का बाप बनते हैं। एडाप्टेड बच्चे हो। वह बच्चे2 ही कहेंगे। इनके लिए मत समझो। डैस्क्शन वह देते हैं। ज्ञान बड़ा ही अटपटा है। खिटपिट भी होती है। पतित आदमी तुम कहते हो हम भगवान है। परन्तु पत्थर बुधियों का कुछ भी ख्याल नहीं चलता। जब देखती हो अच्छी सर्विस पर बुलावा होता है तो जाना चाहिए। एक दो रोज में कोई नुकसान नहीं हो जाता है।

देहली से एक लिखत आई थी। लेटर अच्छा लिखा हुआ है। जहां म्युज़ियम है वहां के लिए। ऐसी2 डनवीटेशन कार्डस भेजना अच्छा है। बाप आते ही हैं पढ़ाने के लिए। तुम कहेंगे हम पढ़ते हैं। भगवानुवाच: मैं तुमको पढ़ता हूं। राजाओं का राजा बनाता हूं। तो पढ़ाई ठहरी ना। सिंगल ताज वाले डबल ताज वाले को माथा टेकते हैं। तो बाप ही राजाओं का राजा बनाते हैं। ऐसी2 बातें युक्ति से लिखनी चाहिए। भगवानुवाच: हे बच्चो मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। यह टापिक। राजाओं के राजा तो देवी देवतायें ही ठहरे। ऐसे2 विचार सागर मथन करो तुम्हारा अमृतवेले होगा। वह टाईम शुध होता है। रात को तो खराब वायुमंडल होता है। सवेरे उठ कर विचार सागर मथन करना चाहिए। 10 बजे सोना, 4 बजे उठना यह नींद काफी है। जाग्रती नींद नहीं करनी चाहिए। खास कर के भाषण करने वालों को तो जरूर विचारसागर मथन करना चाहिए। लिखना चाहिए फिर देखना चाहिए। अभ्यास पड़ जाता है तो फिर वह पक्का हो जाता है। बच्चों को सर्विस का बहुत ख्याल आना चाहिए। बहुत बहुत सर्विस कर सकते हैं। घाट पर भी जा सकते हैं। पानी से पाप नाश होते हैं। आत्मा के पाप धोते हैं या शरीर के? आत्मा निर्लिप तो हो न सके। फुर्सत तो बहुत है। मंदिरों में भी जा सकते हैं। पण्डे के घर में जाकर रहेंगे। तो उतना खर्चा नहीं लगता है। धर्मशालायें भी बहुत हैं।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते, नमस्ते। नमस्ते किसने की? गुडनाईट किसने की? सोचो तो सही। बड़ी गुह्य राज़ है।

-: : ओमशान्ति : : -